विश्व मिशन–दिवस –2024 के उपलक्ष पर संत पिता फ्रान्सिस का सन्देश।

20 अक्तूबर 2024

'जाओ और सब को विवाह भोज में बुला लाओ' (मत्ती 22:9)

प्रिय भाइयो व बहनो।

इस वर्ष के विश्व मिशन दिवस के 'विषय' को मैंने संत मत्ती के सुसमाचार के 'विवाह–भोज' दृष्टान्त (दे. मत्ती 22:1–14) से लिया है। आमंत्रित अतिथियों ने जब निमंत्रण का अस्वीकार किया तब इस दृष्टान्त के प्रमुख पात्र राजा, अपने नौकरों को बुलाकर यह आदेश देते हैं: ''चोराहों पर जाओ और जितने भी लोग मिलें, सब को विवाह–भोज में बुला लाओ''(मत्ती 22:9)। इस दृष्टांत पर, प्रभु येसु के जीवन–संदर्भ तथा प्रस्तुत वृतांत के परिप्रेक्ष्य से चिंतन करके, सुसमाचार प्रचार हेतु कई आयामों को हम प्राप्त कर सकते हैं और ये (आयाम), हम जैसे प्रभु ख्रीस्त के मिशनरी प्रेरितों के लिए सदैव, विशेषकर 'सिनड़ल यात्रा' के इस समापन समय के अवसर पर, अधिक उपयोगी व सामयिक सिद्ध होंगे। क्योंकि कलीसिया का यह सम्मिलित–सहगामी ('सिनडल') अभियान, अपने लक्ष्य – 'संयुक्तता, सहभागिता, व मिशन'– द्वारा, कलीसिया को उसके अपने प्रथम कर्तव्य पर पुनः केन्द्रित करना चाहता है और यह प्रथम कर्तव्य है: 'आज के विश्व में सुसमाचार का प्रचार'।

1. ''जाओ और आमंत्रित करो।'' बाहर जाकर दूसरों को प्रभु के भोज में बार–बार आमंत्रित करने का ''अथक प्रयास'', सुसमाचार–प्रचार का एक विशिष्ट पहलू है।

नौकरों को प्रदत्त राजा के आदेश में ऐसे दो क्रियात्मक शब्द हैं जो सुसमाचार–प्रचार की केंद्रीयता को रेखांकित करते हैं। ये दो क्रिया हैं: ''बाहर जाना'' व '' आमंत्रित करना''।

प्रथम क्रिया के संबंध में हमें यह ज्ञात होना चाहिए कि राजा के निमंत्रण को आमंत्रितों तक पहुँचाने हेतु नौकरों को पहले ही भेज दिया गया था (मत्ती 22:3–4)। यहाँ हम देखते हैं कि मिशन का एक पहलू है ''अथक परिश्रम'', अर्थात 'बार–बार, अविश्रांत', सभी लागों के पास जाना' मिशन है। बार बार जाने से, सब लोगा, प्रभु ईश्वर से मिलने तथा उनके साथ संबंध स्थापित करने निमंत्रण पा सकेंगे। यहाँ मिशन को अथक व अविश्रांत प्रयास के रूप में दर्शाया गया है। प्रेम व दया के धनी प्रभु ईश्वर, सभी लोगों से मिलने बराबर आगे बढ़ता रहता है तथा अपने राज्य के आनन्द में सहभागी बनाने के लिए उन्हें बुलाता रहता है, भले इस बुलावे के प्रति उदासीन रहकर, जनता इसे इनकार ही क्यों न कर दें। पिता ईश्वर के दूत प्रभु येसु मसीह जो भले–चरवाहे हैं, भटकी व खोई हुई इस्राएल रूपी भेड़ों को खोजने निकल पड़े थे और इससे भी अधिक कि सबसे दूर खो गयी भेड़ों तक भी वे पहुँचना चाहते थे (योहन 10:16)। अपने पुनरूत्थान के पूर्व व बाद में भी अपने शिष्यों से प्रभु येसु ने कहा, ''जाओ'', और इस तरह उन्होंने शिष्यों को भी अपने मिशन में सहभागी बनाया (लूका 10:3; मारकुस 16:15)। प्रभु से प्राप्त मिशन की वफ़ादारी में, कलीसिया अपनी ओर से दुनिया के अन्तिम छोर तक बराबर जाती रहेगी। कतिपय कठिनाई व बाधाओं के बाद भी, बिना निराश हुए व थके, बार–बार लोगों के पास जाने की आवश्यकता को कलीसिया बनाये रखेगी।

इस अवसर पर मैं उन सब मिशनरियों को धन्यवाद देना चाहता हूँ जो प्रभु की बुलाहट को सुनकर, अपना सबकुछ त्यागकर, अपनी जन्मभूमि से बहुत दूर, या तो उन लोगों के बीच सुसमाचार सुनाने गए (हैं) जिनके

पास सुसमाचार अब तक पहुँचा ही नहीं (है) या ऐसे लोगों के मध्य, जो हाल ही में शुभ–संदेश को पानेवाले रहे हैं। प्रिय मित्रो। 'साधारण जनता हेतु मिशन' के प्रति उदारतापूर्ण समर्पण ही आपकी प्रतिबद्धता की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति होगी। इस 'जन–साधारण हेतु मिशन' को स्वयं प्रभु येसु ने इन वचनों के साथ अपने शिष्यों को सौंपाः ''जाओ। सभी देशों को मेरे शिष्य बनाओ''(मत्ती 28:19)। हम बराबर प्रार्थना करते हैं तथा संसार के अंतिम छोर तक, सुसमाचार प्रचार के पुनीत कर्तव्य को पूरा करने हेतु प्राप्त असंख्य मिशनरी–बुलाहटों केलिए, ईश्वर को सदा धन्यवाद देते रहते हैं।

हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि हरेक ख्रीस्तीय, हर संदर्भ में, सुसमाचार के लिए साक्ष्य प्रस्तुत करने के द्वारा, सार्वभौमिक मिशन कार्य में भागीदारी निभाने हेतु बुलाया जाता है, जिससे संपूर्ण कलीसिया, अपने प्रभु व गुरू के साथ, आज के विश्व के चौराहों (व कोने कोने) पर बराबर जा सके। कलीसिया में आज की विडंबना (नाटक) यह है कि प्रभु येसु बराबर खटखटा रहे हैं, (लेकिन) अन्दर से; ताकि हम उन्हें बाहर जाने दे सकें। लेकिन हमारी कलीसिया अक्सर कैद–खाना–सा बनकर रह जाती है, जो प्रभु को बाहर जाने नहीं देती है और उन्हें 'अपना निजी' बनाकर रख देती है। जब कि प्रभुवर मिशन के लिए आए और चाहते हैं कि हम भी मिशनरी बनें। (18 फरवरी 2023 ई. को लोक–धर्मी, परिवार व जीवन के विभाग द्वारा आयोजित सभा में उपस्थित सदस्यों को प्रदत्त भाषण से)। दीक्षित (बप्तिस्मा–प्राप्त) हम सब विश्वासीगण, अपने अपने जीवन की अवस्था के अनुसार, कलीसिया के प्रारंभ में जैसे हुआ ठीक वैसे, एक नवीन मिशन–अभियान को, नये सिरे से, उद्घाटित करने हेतु तैयार रहें।

उपर्युक्त दृष्टांत में नौकरों के लिए राजा का आदेश मात्र 'जाने' के लिए नहीं बल्कि 'निमंत्रण' देने के लिए भी है; और यह कहकर निमंत्रित करने कि 'विवाह भोज में पधारिये' (मत्ती 22:4)। यहाँ हम प्रभु द्वारा सुपुर्द (सौंपे गए) मिशन में और एक विशिष्ट पहलू देख सकते हैं जिसका महत्व किसी भी तरह कम नहीं है। हम यह कल्पना कर सकते हैं कि नौकर लोग निश्चित रूप से आमंत्रितों के सामने आदरपूर्वक, विनम्र भाव से प्रस्तुत हुए होंगे और आग्रह के साथ राजा के निमंत्रण को प्रस्तुत किये होंगे। हरेक सृष्टि तक शुभ–संदेश पहुँचाने की हमारी मिशन–शैली भी ठीक उस प्रभु की शैली के समान ही होनी चाहिए जिस प्रभु को हम हर शुभ–संदेश में देते व घोषित करते हैं। मरकर जी उठने वाले प्रभु येसु में विद्यमान, पिता ईश्वर के अद्वितीय व सुन्दर उद्धारक प्रेम को, सारे विश्व के सम्मुख घोषित करना मिशनरी प्रेरितों का कर्तव्य है (Evangeli Gaudium,36)। लेकिन उन्हें चाहिए कि इस घोषणा को वे आनन्द, महानुभावता, उदारता, तथा परोपकारिता के साथ करें जो अंतर्गत पवित्र आत्मा के फल हैं (गला 5:22)। यह कार्य दबाव, छल–बल का प्रयोग, फुसलाकर, धर्म–परिवर्तन हेतु मजबूर करने का प्रयास आदि से मुक्त (व वंचित) हो और अनुकम्पा, घनिष्टता व कोमलता की प्रचूरता से युक्त व सुसज्जित रहे। इस तरह, इस में खुद ईश्वर का ही अस्तित्व व उनका अपना कृत्य प्रतिबिंबित होगा।

2. '' विवाह समारोह में आमंत्रित''। प्रभु येसु व कलीसिया के मिशन के यूखरिस्तीय व उनके पुनरागमन (Eschatological) का आयामः

इस दृष्टांत में राजा नौकरों से कहते हैं कि वे आमंत्रितों को अपने पुत्र के विवाह–भोज में बुला लाएँ। यह भोज, इस लोक (संसार) के अंत में संपन्न होने वाले अलौकिक भोजन का प्रतिबिम्ब है। यह, ईश–राज्य में संपन्न होने वाली उस आखिरी मुक्ति का प्रतिरूप है जब ईश्वर मृत्यु को सदा केलिए समाप्त कर देगा (इसायाह 25:6–8)। यह मुक्ति प्रभु येसु के आगमन से, अब (वर्तमान समय) से ही संपन्न (होने लगा) है; उस

मसीह व ईश–पुत्र ने भरपूर (मात्रा में) जीवन दिया है (योहन 10:10), जो (विवाह भोज में) रसदार भोजन व उत्तम दाख रस से तैयार की गई मेज़ के प्रतीक से बिंबित व चिन्हित होता है। ।

प्रभु ख्रीस्त का मिशन 'समय के पूर्ण होने' से संबंध रखता है जिस तरह उन्होंने अपने प्रचार के प्रारम्भ में ही कहा थाः ''समय पूरा हो चुका है और ईश्वर का राज्य निकट आ गया है''(मारकुस 1:15)। ख्रीस्त के शिष्यों को इसलिए बुलाया गया है कि वे अपने प्रभु व गुरू के मिशन को बनाये रखें। इस संबंध में कलीसिया के मिशन में निहित 'प्रभु–पुनरागमन' की पहचान (eschatological character) के विषय में द्वितीय वत्तिकान की शिक्षा को हम याद करते हैंः ''मिशन–कार्यकाल' प्रभु के प्रथम आगमन से लेकर द्वितीय आगमन तक है....क्योंकि (इस समय के दौरान) प्रभु के पुनरागमन के पहले ही सभी देशों को सुसमाचार सुनाया जाना चाहिए'' (मार्कुस 13:10)। (Ad Gentes 9)

हम जानते हैं कि प्रथम विश्वासियों का मिशन–उत्साह, प्रभु के (सन्निकट) पुनरागमन (eschatological) के प्रबल–भाव से ओतप्रोत था। अतः वे सब सुसमाचार–प्रचार की अत्यावश्यकता की तीव्र इच्छा से प्रेरित थे। आज भी इस परिप्रेक्ष्य को बनाए रखना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमारी मदद करती है उन लोगों के आनन्द व उत्साह के साथ सुसमाचार का प्रचार करने, जो यह जानते हैं कि ''प्रभु–राज्य के आगमन का समय निकट है'' तथा उन लोगों के भरोसे के साथ आगे बढ़ने ''जो उस गन्तव्य की ओर'' आगे बढ़ रहे हैं, जहाँ हम सब ईश्वर के राज्य के विवाह भोज में प्रभु ख्रीस्त के साथ एकत्रित होंगे। संसार हमारे समक्ष भोग–विलास, स्वार्थपूर्ण सुविधा, धन का संचय तथा व्यक्तिवाद रूपी भोज की मेज़ उपस्थित कराता है। लेकिन सुसमाचार हरेक को दैविक भोज हेतु बुलाता है जिसकी पहचान है आनन्द, सहभागिता, न्याय तथा ईश्वर एवं पड़ोसियों की संयुक्तता का बन्धुत्व।

जीवन की पूर्णता प्रभु ख्रीस्त का उपहार है। इसे यूखरिस्तीय भोज में पहले से ही उपस्थित कराया गया है जिसे कलीसिया उनकी स्मृति में, उन्हीं के आदेशानुसार मनाती है। सुसमाचार के मिशन में, हम पारलौकिक –स्वर्गीय प्रभु–भोज के निमन्त्रण को हरेक के पास पहुँचाते हैं। यह सुसमाचारीय निमंत्रण, युखरिस्तीय भोज के निमंत्रण के साथ आंतरिक रूप से जुड़ा है और इस युखरिस्तीय भोज द्वारा प्रभु हमें अपने वचन तथा अपने ही शरीर व रक्त से पोषित करते हैं। जैसे संत पापा बेनेडिक्ट सोलहवें ने सिखाया है कि हर यूखरिस्तीय समारोह, ईश–जनता के पारलौकिक–समागम को सांस्कारिक रूप से संभव बनाता है। हमारेलिए युखरिस्तीय भोज, जीवन के अंत में प्राप्त होने वाले स्वर्गीय भोज का पूर्वस्वाद है जिसके बारे में नबियों ने भविष्य वाणी की थी (इसायाह 25:6–9)। इसे नये विधान में, संतों की मण्डली द्वारा आनन्द के साथ मनाये जाने वाले (प्रकाशना 19:9) 'मेमने के विवाहोत्सव के रूप में दर्शाया गया है (साकरामेन्तुम कारितातिस 31)।

परिणाम स्वरूप यूखरिस्त को उसके सभी पहलुओं में, विशेषकर इसके स्वर्गीय व मिशन आयामों में, गहराई से इसका अनुभव करने हेतु हम सब बुलाये गये हैं। मैं इस बात को रेखांकित करते हुए कहना चाहता हूँ कि कोई भी यूखरिस्त की मेज़ की ओर जब तक नहीं बढ़ सकता है तब तक वह शुभ–संदेश सुनाने के मिशन के प्रति आकर्षित न हो और यह मिशन स्वयं प्रभु ईश्वर के हृदय में इसलिए प्रारम्भ होता है ताकि यह सबों तक पहुँच सके। कोविड के पश्चात् स्थानीय कलीसियाओं में यूखरिस्त का जो सराहनीय नवीनीकरण हो रहा है, यह हरेक विश्वासी के हृदय में मिशन–भावना को पुनः जागृत करने के लिए आवश्यक है। अतः हमें चाहिए कि गहरे विश्वास तथा हार्दिक उत्साह के साथ हर मिस्सा में विश्वास के इस रहस्य को हम घोषित करते रहें : ''हे प्रभु हम तेरी मृत्यु की घोषणा करते हैं, और तेरे पुनरागमन तक तेरे पुनरूत्थान की घोषणा करते रहेंगे।''

सन् 2025 ई. में मनायी जानेवाली जयन्ती की तैयारी में प्रार्थना हेतु समर्पित इस वर्ष में मैं अनुरोध करते हुए सबको प्रोत्साहित करना चाहता हूँ कि सभी विशेष करके यूखरिस्तीय समारोह में भाग लें तथा कलीसिया के सुसमाचार–प्रचार के मिशन के लिए प्रार्थना करें। प्रभु के आदेश का पालन करते हुए हर यूखरिस्तीय व अन्य सांस्कारिक समारोह में, कलीसिया ''हे हमारे पिता'' प्रार्थना को इस निवेदन के साथ करती रहती है कि ''तेरा राज्य आये''। इस तरह, सभी दैनिक प्रार्थनाएँ (विशेषकर यूखरिस्तीय समारोह), हमें तीर्थ–यात्री व भरोसे के मिशनरी के रूप में परिणत करती हैं। प्रभु ईश्वर में प्रदत्त अनन्त जीवन की ओर यात्रा करते हुए, हम उस वैवाहिक भोजन की ओर बढ़ते हैं जिसे प्रेमी पिता ईश्वर ने अपने सभी बच्चों के लिए तैयार किया है।

3. ''प्रत्येक''। – पूर्णतः सिनडल (सम्मिलित–सहयात्रिक–विश्वासि समुदाय) व मिशनरी कलीसिया में ख्रीस्त के शिष्यों के सार्वभौमिक मिशन।

यह तीसरा व अंतिम चिंतन राजा द्वारा निमंत्रित अतिथियों (ग्रहणार्थी) से संबंध रखता है। यह निमंत्रण ''हर–एक'' के लिए है। जैसे मैंने जोर देकर कहा कि मिशन का केंद्रबिंदु यह है कि बिना किसी भी प्रकार के अपवाद के 'सभी' इस मिशन के अंतर्गत आते हैं। हमारा हर मिशन–कार्य प्रभु ख्रीस्त से है जिससे 'वह' सबको अपनी ओर आकर्षित कर लें। (Address to the general assembly of the Pontifical missionary societies, 3rd June 2023)। आज के इस विश्व में, जो विभाजन तथा टकरावपूर्ण संघर्ष से खंडित व छिन्न–भिन्न है, ख्रीस्त के सुसमाचार की उपस्थिति न केवल शांत व कोमल स्वभाव का है बल्कि जोर से गूँजने वाली सुदृढ़ व सुस्पष्ट आवाज़ भी है। अत्यधिक प्रभावशाली सुसमाचार की यह दृढ़ गूँज, व्यक्तियों को इसलिए बुलाती है कि वे एक दूसरे से मिलें व यह पहचानें कि वे आपस में भाई और बहन हैं तथा प्रोत्साहित करती है कि विभिन्नता के बीच के सद्भाव को पहचानें व मनायें। ''सबके मुक्तिदाता ईश्वर यह चाहता है कि सबों की मुक्ति हो और सभी सत्य के ज्ञान को प्राप्त करें'' (1 तिमथी 2:4)। कभी भी हम यह न भूलें कि हमारे मिशन कार्यों के द्वारा सभी के पास सुसमाचार पहुँचाने का आदेश हमें मिला है। लेकिन ध्यान रखें कि सुनने वालों पर अनावश्यक भार लादने वाले जैसे नहीं बल्कि उनके आनंद में सहभागी बनकर, तथा सुन्दर क्षितिज की ओर इंगित करते हुए स्वादिष्ट भोजन केलिए निमंत्रण देने वालों जैसे हम पेश आएँ।(Evangeli Gaudium, 14).

ख्रीस्त के मिशनरी शिष्यगण, बिना भेद–भाव के, भले–बुरे सबों के हितार्थ सोचने, ख्याल रखने व चिंता करने वाले होते हैं। विवाह भोज का दृष्टांत हमें यह बताता है कि राजा के आदेशानुसार नौकरों ने ''जो भी मिले, भले–बुरे सबों को एकत्रित किया'' (मत्ती 22:10)। इससे भी बढ़कर उन सब को बुलाया गया जो लाचार, गरीब, अंधे–लंगड़े तथा दिव्यांग थे। दूसरे शब्दों में समाज के तिरस्कृत, वर्गीकृत तथा हाशिये पर के निम्नतम स्तर के भाई व बहन राजा के विशिष्ट अतिथि (बनते) हैं (लूका 14:21)। अपने पुत्र के लिए जो विवाह भोज प्रभु ईश्वर ने तैयार किया है वह सब केलिए (उपलब्ध) है क्योंकि हरेक के प्रति उसका प्रेम अत्यधिक व शर्तरहित है। योहन के सुसमाचार में पढ़ते हैं कि ''ईश्वर ने संसार को इतना प्यार किया कि उसने उसके लिए अपने एकलौते पुत्र को अर्पित कर दिया जिससे जो भी उसमें विश्वास करेगा उसका सर्वनाश नहीं बल्कि उसे अनन्त जीवन प्राप्त हो'' (योहन 3:16)। हर कोई, प्रत्येक आदमी और औरत, जीवन को बदलने व उद्धार करने वाली ईश–कृपा में भागीदार होने हेतु ईश्वर द्वारा निमंत्रित है। इसे स्वीकार करते हुए और स्वयं के परिवर्तन हेतु तैयार रहकर तथा इसे ''विवाह–वस्त्र'' की तरह पहन कर, मुफ़्त के इस दैविक उपहार के लिए केवल ''हाँ'' कहने की ज़रूरत है (मत्ती 22:12)।

''सभी के प्रति मिशन''–''सबों का समर्पण चाहता है''। सुसमाचार की सेवा हेतु हमें सम्मिलित–सहयात्रिक विश्वासी समुदाय (सिनडल) व मिशनरी कलीसिया – के पूर्ण निर्माण –की ओर अपनी यात्रा को बनाये रखने की आवश्यकता है। स्वतः कलीसिया का यह सम्मिलित सहयात्री–समुदाय (सिनडल) स्वरूप मिशनरी है तथा मिशन अपने आप में सदा सम्मिलित–सहयात्रिक–विश्वासी समुदाय का निर्माण (सिनडल) है। अतः विश्व–व्यापी तथा स्थानीय कलीसिया में घनिष्ट मिशन–सहयोग की अत्यधिक आवश्यक्ता तथा ज़रूरत है। द्वितीय वत्तिकान के तथा मेरे पूर्ववर्तियों के पद–चिन्हों पर चलते हुए विश्व भर के धर्मप्रान्तों से '*पोन्टिफिकल मिशन सोसाइटी* की सेवा हेतु सिफ़ारिश करना चाहता हूँ। ये संस्थाएँ उस काथलिक प्राथमिक माध्यम को प्रतिनिधित्व करती हैं जिसके द्वारा सबों की सहायतार्थ, अपनी अपनी क्षमता के अनुसार, काथलिक लोग, जो बचपन से ही वास्तविक सार्वभौमिक और मिशनरी दृष्टिकोण से ओतप्रोत हैं, योगदान पहुँचाते आए हैं (Ad Gentes 38)। इसी कारण से ही विश्व–मिशन दिवस के अवसर पर सभी स्थानीय कलीसियाओं का योगदान, विश्व–व्यापी कलीसिया के निधि के रूप में एकत्रित किया जाता है। इसी निधि से ही, विश्वास के प्रचार व प्रसार हेतु, आवश्यकतानुसार, संत पापा के नाम पर, विश्व भर में कलीसिया के मिशन के लिए सहायता बाँटी जाती है। प्रार्थना करें कि प्रभु की मदद से हम अधिक से अधिक सम्मिलित–सहयात्रिक विश्वासी समुदाय (सिनडल) व मिशनरी कलीसिया बनें।(Homily for the concluding Massof the OrdinaryGeneral Assembly of the synod of Bishops)।

अंत में हम माता मरियम की ओर निहारें जिन्होंने गलीलिया के काना विवाह में प्रभु येसु से चमत्कार करने के लिए कहा था (योहन 2: 1–12)। हम देख सकते हैं कि यह चमत्कार विशेषकर विवाह समारोह में घटित हो रहा है। प्रभु ने नव–विवाहितों को तथा सभी अतिथियों को प्रचूर मात्रा में नया दाखरस प्रदान किया। यह घटना प्रभु द्वारा सब के लिए अंतिम समय में तैयार किये जा रहे उस विवाह भोज के पूर्वाभास के तुल्य है। हमारे समय में, ख्रीस्त के शिष्यों के सुसमाचार प्रचार के मिशन के लिए माता मरियम से हम उनकी ममतापूर्ण मध्यस्थ–प्रार्थना हेतु निवेदन करें। माता मरियम के आनन्द व ममता भरी संगति के साथ, कोमलता तथा प्रेम से उत्पन्न बल सहित (Evangeli Gaudium 288) हम निकल पड़ें हमारे राजा व मुक्तिदाता के निमंत्रण को हरेक के पास पहुचाँने। सुसमाचार प्रचार के तारा व पथप्रदर्शिका (the star of Evangelization) पवित्र माता मरियम, हमारेलिए प्रार्थना करें।

रोम, संत योहन लातरन, 25 जानवरी 2024, संत पौलुस के मन परिवर्तन का समारोह,।
फ़्रान्सिस.